नैक (NAAC) द्वारा "A" ग्रेड प्राप्त

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Wardha

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

जनसंपर्क विभाग- Ph./Fax: 07152-252651 मो.9960562305 इ-मेल: mgahvpro@gmail.com

वेबसाइट : www.hindivishwa.org

हिंदी विश्वविद्यालय में महिला दिवस

स्त्री की क्षमता, शक्ति, योग्यता का हों सम्मान -कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र

वर्धा दि. 8 मार्च 2016: स्त्री एक अव्यक्त शक्ति है। स्त्री की क्षमता, शक्ति और योग्यता का सम्मान होना चाहिए। उक्त विचार महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने व्यक्त किये। वे विश्वविद्यालय के स्त्री अध्ययन विभाग द्वारा अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित व्याख्यान में बोल रहे थे। संस्कृति विद्यापीठ के गुर्रम जाशुवा सभागार में

आयोजित कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में आवासीय लेखिका चित्रा मुदगल, आवासीय लेखक रमेश दवे, असीमा भट्ट, मुंबई, संस्कृति विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. एल. कारूण्यकरा, स्त्री अध्ययन विभाग की प्रभारी डॉ. सुप्रिया पाठक मंचासीन थे।

कुलपति प्रो. मिश्र ने अध्यक्षीय उदबोधन में कहा कि महिलाएं संघर्ष कर आगे बढ़ती हैं और इसके कई उदाहरण हमारे सामने मौजूद हैं। उनमें संघर्ष कर लडने की क्षमता और शक्ति होती है। आज का समय अनेक धाराओं का संक्रमण का समय है और महिला विमर्श के लिए भी संक्रमण का समय है। इसलिए जरूरी है कि हम अपने अंदर सांस्कृतिक विवेक विकसित करें। उन्होंने आहवान किया कि

विकास की प्रक्रिया में महिलाओं को चाहिए कि वे पात्रता लाने के लिए सिद्दत के साथ संकल्प लें।

आवासीय लेखिका एवं उपन्यासकार चित्रा मुदगल ने महिलाओं की बुनियादी जरूरतें और अधिकारों की बात करते हुए कहा कि महिलाओं को मस्तिष्क की लड़ाई लड़नी चाहिए और अपनी क्षमताओं को पूरापूरा उपयोग करना चाहिए। रंगकर्मी एवं कवयित्री असीमा भट्ट ने प्रदर्शनकारी कलाओं में महिलाएं विषय पर अपनी बात रखी। उन्होंने कहा कि संघर्ष को जीतना हो तो महिलाओं को आत्म-विश्वास से

आगे बढ़ना चाहिए। इस उपलक्ष्य में उन्होंने द्रौपदी के प्रसंग को अभिनय के साथ प्रस्तुत किया।

संस्कृति विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. एल. कारूण्यकरा ने स्त्री शिक्षा और सशक्तिकरण के लिए सावित्रीबाई फुले तथा डॉ. बी. आर. अंबेडकर के योगदान का जिक्र करते हुए कहा कि महिला दिवस को भारतीय परिप्रेक्ष्य में देखा जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि हम पश्चिम देशों को कुप्रथा के लिए दोषी ठहराते है परंतु ऐसी अनेक प्रथाएं है जो भारतीय समाज ने ही बनाई। उन्होंने हिंदू कोड़ बिल एवं संपत्ती का अधिकार आदि विषयों को अपने वक्तव्य में विस्तार से रखा। कार्यक्रम में आवासीय लेखक रमेश दवे ने भी समयोचित विचार व्यक्त किये।

कार्यक्रम में प्रदर्शनकारी कला विभाग के विद्यार्थियों ने कात्यायणी की कविता 'गार्गी' पर नाट्यमंचन किया जिसका निर्देशन विभाग की सहायक प्रोफेसर सुरभि विप्लव ने तथा मार्गदर्शन विभाग के अध्यक्ष प्रो. सुरेश शर्मा और सतीश पावड़े ने किया। मंचन में अभिलाषा, ज्योति, बृजनाथ, सुनील, सद्दाम और राजशेखर ने भूमिकाएं निभाई। छायांकन राजदीप राठौड़ का था। संगीत आलोक निगम ने दिया तथा जितेंद्र, विजय, सुभाष और मेघा ने विशेष सहयोग दिया। मंचन के माध्यम से महिलाओं के प्रश्नों को समाज द्वारा किस प्रकार दबाया जाता है इसे प्रस्तुत किया। इस प्रसंग को देखकर दर्शक भावूक हो गए। समारोह का संचालन स्त्री अध्ययन विभाग की प्रभारी डॉ. सुप्रिया पाठक ने किया तथा आभार सहायक प्रोफेसर डॉ. अवंतिका शुक्ला ने माना। कार्यक्रम में प्रो. मनोज कुमार, प्रो. के. के. सिंह, डॉ. शोभा पालीवाल, डॉ. अन्नपूर्णा सी., डॉ. नृपेंद्र प्रसाद मोदी, डॉ. शंभू गुप्त, डॉ. अनवर अहमद सिद्दीकी डॉ. सुरजीत कुमार सिंह, डॉ. सुनील कुमार, डॉ. आर. पी. यादव, डॉ. कुसुम त्रिपाठी, बी. एस. मिरगे, अमित विश्वास, मैत्रेयी, हिमांशु शेखर सहित शोधार्थी एवं विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।